भा० जैन परिषद् परीक्षा बोर्ड द्वारा स्वीकृत

# जैन धर्म शिक्षावली

## दूसरा भाग

—o—

लेखक

बा० उग्रसैन जैन, एम. ए., एल-एल. बी. वकील

रोहतक

—o—

प्रकाशक

अ० भा० दि० जैन परिषद् पब्लिशिंग हाउस

२०४, दरीबा कलां, देहली

| २३ वीं बार | जनवरी सन् १९६४ | मूल्य |
| --- | --- | --- |
| ५२०० | वीर-निर्वाण सम्वत् २४९० | ४० नये पैसे |

## विषय-सूची

ॐ

# जैन धर्म शिक्षावली

## दूसरा भाग

—०—

## पाठ १ प्रार्थना

वीतराग सर्वज्ञ हितंकर,
शिशुगण की सब पूरो आस।
ज्ञान भानु का उदय होउ अब,
मिथ्यातम का होय विनाश ॥१॥
जीवों की हम करुणा पालें,
झूठ वचन नहीं कहें कदा।
चोरी कबहुँ न करिहैं स्वामी,
ब्रह्मचर्य व्रत रखें सदा ॥२॥
तृष्णा लोभ बढ़े न हमारा,
तोष सुधा नित पिया करें॥
श्री जिनधर्म हमारा प्यारा,
उसकी सेवा किया करें ॥३॥
तर्क छन्द व्याकरण कला सब,
पढ़ें पढ़ावें चित्त देकर।

विद्या वृद्धि करें हम निशि दिन,
गुरुजन की आशिश लेकर ॥४॥
माता-पिता की आज्ञा पालें,
गुरु की भक्ति धरें उर में ॥
रहें सदा हम कर्तव तत्पर,
उन्नति करें निज निजपुर में ॥५॥
दूर भगावें बुरी रीतियां,
सुखद रीति का करें प्रचार।
मेल मिलाप बढ़ावें हम सब,
धर्मोन्नति का करें विचार ॥६॥
दुःख सुख में हम समता धारें,
रहें अचल जिमि सदा अटल।
न्याय मार्ग को लेश न त्यागें,
वृद्धि करें निज आत्म बल ॥७॥
अष्ट कर्म जो दुःख हेतु हैं,
उनके क्षय का करें उपाय।
नाम आपका जपें निरन्तर,
विघ्न शोक सब ही टर जांय ॥८॥
हाथ जोड़ कर शीश नवायें,
बालक जन सब खड़े खड़े।

यह सब पूरी आस हमारी,
चरण शरण में आन पड़े ॥६॥

प्रश्नावली

१—प्रार्थना किसे कहते हैं ? यह कब और कैसे करनी चाहिए ?
२—यह प्रार्थना पढ़कर आप क्या चाहते हैं ?
३—इस प्रार्थना को आदि से लेकर अन्त तक मुखाग्र सुनाइये ?

## पाठ २ साधु सेवा का फल

किसी समय में चम्पापुरी नगरी में वृषभदास नाम का एक बड़ा सेठ रहता था। उसकी सेठानी का नाम जिनमति था। उसके यहाँ एक ग्वाला नौकर था। उसका नाम था सुभग। सुभग बड़ा सीधा सादा और सच्चा आदमी था। एक दिन शाम को जंगल से गाय-भैंसों को चराकर लौट रहा था कि राह में उसने एक साधु को एक शिला पर ध्यान में बैठे देखा। जाड़ा बहुत पड़ रहा था। ग्वाले ने सोचा कि इनके पास कुछ कपड़ा नहीं है और जाड़ा इतने जोर का पड़ रहा है। आज इनकी रात कैसे कटेगी ? कहीं ऐसा न हो कि जाड़े के मारे इन्हें महान् कष्ट उठाना पड़े, यह सोचकर वह रात को वन में ही रह गया और उसने आग जलाकर साधु के चारों ओर गर्मी पैदा करदी। इस तरह उसने सारी रात साधुकी सेवा में बिता दी।

सवेरे जब साधु ध्यान छोड़कर जाने लगे तो उन्होंने ग्वाले को देखा और दया करके उसको महामंत्र 'णमो अरहंताणं' दिया और उसे उसका जप करने को कहा।

ग्वाले को धीरे-धीरे इस मन्त्र पर श्रद्धा हो गई वह सदा इसका ध्यान करने लगा। ग्वाले का हाल सुन सेठ ने भी उसकी परोपकार और गुरुभक्ति की प्रशंसा की और उसे बड़े मान से रखने लगा। एक दिन वह ग्वाला पशु चराने के लिए जंगल में गया। वर्षा का समय था। नदी-नाले भरे हुए थे। जब उसकी भैंसें नदी पार जाने लगीं तब उन्हें लौटा लाने के लिए ग्वाला भी उनके पीछे-पीछे नदी में कूद पड़ा और वह डूब गया। मर कर वह अपने शुभ परिणामों के कारण सेठ वृषभदास के घर एक पुण्यवान् पुत्र हुआ। सेठ वृषभदास ने इसका नाम सुदर्शन रखा। सेठ सुदर्शन बड़े धनवान् और नामी सेठ हुए। इनके कई पुत्र हुए। ये बड़े भोगों को भोग, अन्त में साधु हो गये। संसार का मोह त्याग, तप और ध्यान कर मुक्त हुए।

बालको! देखो यह परोपकार और साधु सेवा का फल था कि एक साधारण ग्वाले को धीरे-धीरे राजपाट ही नहीं, मोक्ष भी मिल गया। तुम्हें भी

चाहिए कि अपने शरीर को दूसरों की सेवा में, धन को गरीब अनाथों के पालन-पोषण में और मन को जगत की भलाई में लगा दो।

चौ०--धर्म न परउपकार समान, जगमें कहीं और है आन
इससे तजकर छल अभिमान, करो सदा परका कल्याण

## प्रश्नावली

१—सेवा किसे कहते हैं ?
२—ग्वाले ने साधु की क्या सेवा की ?
३—साधु ने ग्वाले को कौनसा महामन्त्र दिया ?
४—ग्वाला सेठ सुदर्शन कैसे बना ?
५—अन्त में सुदर्शन सेठ की क्या गति हुई ?
६—इस कथा से आपको क्या शिक्षा मिलती है ?
७—निम्न पद्य को जबानी सुनाइये। इसका अर्थ भी बताइये।
'धर्म न पर उपकार समान, करो सदा पर का कल्याण।'

## पाठ ३ स्थावर जीव

पुत्र—माताजी, हमारी फूलों की बेल और आम का छोटा सा पेड़ जो अभी हमने लगाया था, दोनों सूख गए।

माता—सुशील, तुमने पानी नहीं दिया होगा।

पुत्र—हाँ माता जी, मैंने उनको सींचा नहीं था। मैं तो सोचता था सींचे बिना ही ये बड़े हो जायँगे।

माता—नहीं बेटा ऐसा नहीं। जैसे बहुत दिन तक भोजन न करने से हम मर जाते हैं, वैसे ही यह बेल, वृक्ष आदि भी पानी के बिना सूख जाते हैं।

पुत्र—तो माताजी, वृक्ष भी हमारी तरह जीव हैं ?

माता—हाँ सुशील, क्या तुम नहीं जानते कि वृक्ष एक जीव है। वृक्ष आदि के सिवा और भी कई चीजें ऐसी हैं जिनमें जीव होता है। देखो बेटा, पहाड़, ओला, अग्नि, हवा आदि में भी जीव मौजूद हैं।

पुत्र—माताजी, मुझे यह मालूम न था। इनको तो मैं अजीव समझता था। मगर ये वृक्ष, बेल वगैरह हमारी तरह रोते-हँसते चलते-फिरते तो नहीं, फिर ये कैसे जीव हुए ?

माता—बेटा, ये दूसरी तरह के जीव हैं, इन्हें 'स्थावर' कहते हैं। ये हमारी तरह चल नहीं सकते, अपने स्थान पर ही खड़े रह कर बढ़ते रहते हैं। इनके केवल एक 'स्पर्शन इन्द्रिय' ही होती है।

पुत्र—माताजी, स्थावर जीव कौन से हैं?

माता—बेटा लो सुनो—

१. कुछ जीव ऐसे होते हैं, पृथ्वी ही उनकी काया होती है। उनको 'पृथ्वीकायिक' जीव कहते हैं। जैसे पहाड़, खान में सोना, चाँदी आदि।

२. कुछ जीव ऐसे होते हैं जिनको अग्नि ही काया होती है, ऐसे जीवों को 'जलकायिक' कहते हैं। जैसे जल, ओला, ओस इत्यादि।

३. कुछ जीव ऐसे होते हैं जिनकी अग्नि ही काय होती है, ऐसे स्थावर जीवों को 'अग्निकायिक' कहते हैं। जैसे आग की लौ, दीपक की लौ इत्यादि।

४. कुछ जीव ऐसे होते हैं जिनकी वायु ही काया होती है ऐसे जीवों को 'वायुकायिक' कहते हैं, जैसे वायु।

५. कुछ जीव ऐसे होते हैं जिनकी वनस्पति ही काया होती है। जैसे वृक्ष, बेल, फल, फूल, जड़ी-बूटी आदि। ये 'वनस्पति कायिक जीव' कहलाते हैं।

पुत्र—माताजी, इन पाँचों प्रकार के जीवों के बिना हम जी नहीं सकते। किन्तु इनकी हिंसा करना पाप है।

माता—बेटा, तुम बड़े समझदार हो, तुम ठीक कहते हो, हिंसा तो जरूर होती है, परन्तु इनके बिना गृहस्थों का काम चल नहीं सकता। हमें इनकी भी बिना मतलब हिंसा नहीं करनी चाहिए।

### प्रश्नावली

१—स्थावर जीव किसे कहते हैं?

२—स्थावर जीव के कितनी इन्द्रियाँ होती हैं? और कौन २ सी?

३—क्या स्थावर जीव चल फिर सकते हैं?

४—स्थावर जीव कितने प्रकार के होते हैं? उनके नाम बताइये और हर एक का स्वरूप उदाहरण सहित बताइये?

५—घोड़ा, अग्नि, हवा, लैम्प की जलती बत्ती, वृक्ष, बेल, फूल इनमें जीव है या नहीं? यदि है तो कौन सा?

६—क्या एक गृहस्थी स्थावर जीवों की हिंसा से सर्वथा बच सकता है?

## पाठ ४ त्रस जीव

पुत्र—माताजी, वृक्ष, फूल, अग्नि, वायु, जल, मिट्टी आदि तो स्थावर जीव हैं। परन्तु कृपाकर यह बतलाइये कि आदमी, बैल, घोड़ा, चिड़िया, कबूतर, मिरड़, ततैया, चिउंटी, मकौड़ी, लट आदि ये

केवल फिरने वाले जीव किस नाम से कहे जाते हैं?

माता—बेटा सुशील! ऐसे जीवों को 'त्रसजीव' कहते हैं।

पुत्र—माताजी क्या ये जीव किसी चीज को हमारी तरह छूकर जान सकते हैं, चल सकते हैं, देख सकते हैं, सूंघ सकते हैं?

माता—नहीं बेटा, इन त्रस जीवों में भी भेद है।

[अ] लट आदि तो ऐसे जीव हैं जिनके केवल स्पर्शन और रसना दो इन्द्रियां होती हैं। ये 'दो इन्द्रिय जीव' कहलाते हैं।

[आ] चिउंटी, मकौड़ा, खटमल, जूं आदि ऐसे जीव हैं जिनके स्पर्शन, रसना और घ्राण ये तीनों इन्द्रियां होती हैं ये 'तेइन्द्रिय जीव' कहलाते हैं।

[इ] मक्खी, भिरड़, ततैया, भौंरा आदि ऐसे जीव हैं जिनके स्पर्शन, रसना घ्राण और चक्षु ये चार इन्द्रियां होती हैं ये 'चौइन्द्रिय जीव' कहलाते हैं।

[ई] मनुष्य, हाथी, घोड़ा, गाय, भैंस, कबूतर, चिड़िया, मछली आदि ऐसे जीव हैं जिनके स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और कर्ण ये पांचों इन्द्रियां होती हैं। ये 'पंचेद्रिय जीव' कहलाते हैं।

पुत्र—माता! पंचेन्द्रिय जीवों में से कोई आकाश

में उड़ने वाले हैं, कोई पृथ्वी पर चलते फिरते हैं और कोई जल में रहते हैं। क्या इनके भी जुदा जुदा नाम हैं।

माता–हाँ बेशक, सुनो—

[क] कौआ, कबूतर, चील, चिड़िया आदि जीव जो आकाश में उड़ते हैं, उन्हें नभचर कहते हैं।

[ख] गाय, भैंस, ऊँट, घोड़ा, कुत्ता, बिल्ली आदि जो पृथ्वी पर चलते फिरते हैं, उन्हें थलचर कहते हैं।

[ग] मछली, मगरमच्छ, मेंढक, कछुआ आदि जल में रहते हैं, उनको जलचर कहते हैं।

### संनी असंनी

माता–बेटा सुशील, आज तुम बाहर कहाँ गये थे?

पुत्र–माताजी, आज तो मैं भैया के साथ सरकस का तमाशा देखने गया था।

माता–मुन्ना जरा बताओ तो सही, वहाँ तुमने क्या देखा?

पुत्र–माताजी, बड़ा ही अनोखा तमाशा देखा। बन्दर को साइकिल चलाते देखा, तोते को पढ़ते और बोलते सुना, हाथी को अपनी सूंड से सलाम करते देखा तथा घोड़े, शेर, कुत्ते आदि जानवरों को चकित

कर देने वाले बड़े-बड़े करतब करते देखा।

माता—क्यों नहीं, अचरज की क्या बात है? बन्दर, तोता, घोड़ा, कुत्ता, सिंह आदि इन सब जीवों में तो सोचने समझने और सीखने की ताकत है। यह अपने सिखाने वालों की इच्छानुसार काम कर सकते हैं। मन वाले जीव सब सैनी होते हैं इनमें विचार शक्ति होती है।

पुत्र—माता जी, तो क्या पंचेन्द्रिय जीव सभी सैनी होते हैं?

माता—नहीं-नहीं, पंचेन्द्रिय जीवों में से कोई-कोई जीव ऐसे होते हैं जिन के मन नहीं होता। वे सिखाने से भी कुछ सीख नहीं सकते, ऐसे जीवों को असैनी कहते हैं। जिन जीवों के मन नहीं होते वे असैनी कहलाते हैं।

पुत्र—माताजी, मैंने कोई पंचेन्द्रिय असैनी जीव नहीं देखा ऐसे कौन से जीव होते हैं।

माता—बेटा, कोई-कोई तोता और पानी में रहने वाले सांप असैनी होते हैं।

## प्रश्नावली

२—त्रस-जीव कितने प्रकार के होते हैं ? उनके जुदा-जुदा भेद उदाह रण सहित बताइये ?

३—सैनी असैनी से आप क्या समझते हैं ? तुम सैनी हो य असैनी ?

४—क्या सभी पंचेन्द्रिय जीव सैनी होते हैं ? यदि नहीं तो पंचेन्द्रिय असैनी में से किसी एक-दो का नाम बताइये ?

५—दोइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौइन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जीवों का भिन्न २ स्वरूप उदाहरण सहित बताइये ?

६—तेइंद्रिय जीवों के जो तीन इन्द्रियां होती हैं, क्या वे चौइन्द्रिय जीवों के पायी जाती हैं ?

७—क्या पृथ्वी पर चलने वाले सभी जीव थलचर होते हैं ?

८—क्या आकाश में चलने वाले सभी तिर्यंच नभचर होते हैं ?

९—एक ऐसा नकशा बनाओ जिससे यह साफ मालूम हो कि नीचे लिखे जीवों में से कौन जीव किस प्रकार के जीव हैं। एकेन्द्रिय दोइंद्रिय कौन हैं ? नभचर, थलचर आदि कौन हैं ? सैनी कौन हैं ? असैनी कौन ? 'औरत, लड़का, घोड़ा, ऊँट, हाथी, रेल इंजन, हवाई जहाज, कौवा, चील, पतंग, कबूतर, बतख, मछली कछुवा, वृक्ष, चिऊंटी, जूं, पानी में रहने वाला सर्प, बिल्ली ।'

## पाठ ५. क्रोध (कषाय)

क्रोध गुस्से को कहते हैं क्रोध दुखदाई होता है।

एक बार दीपायन नाम के साधु विहार करते हुए द्वारिका नगरी में आये और नगर के बाहर वन में ठहर गये, एक दिन वह वन में तपस्या कर रहे थे उस समय कुछ राजकुमार पर्वत की ओर से खेल-कूद कर आ रहे थे। रास्ते में राजकुमारों को जोर से प्यास लगी। प्यास से वे बेचैन हो रहे थे। आते-आते उनकी निगाह महुवे के पेड़ के नीचे भरे हुए एक पानी के गढ़े पर पड़ी वह पानी न था, किन्तु महुओं के गिरने से वह पानी शराब बन गया था। राजकुमारों ने उसे पानी समझ कर पी लिया और नशे में बेहोश हो गये। उनकी नजर दीपायन साधु पर पड़ी। बेहोशी में उन्होंने साधु पर कंकड़-पत्थर बरसाने शुरू कर दिये और उन्हें इतना दुखी किया कि साधु का मन घबड़ा गया। उनकी क्रोधाग्नि भड़क उठी। क्रोध के कारण तपस्या-बल से साधु के कंधों से बिजली निकल पड़ी। इस बिजली से सारी द्वारिका देखते-देखते जलकर राख हो गई। स्वयं साधु भी उस आग में जलकर भस्म हो गये और मर कर खोटी गति में गये।

सच है क्रोध में बड़े-बड़े ऋषि-मुनि भी गिर कर खोटी गति को जाते हैं।

प्यारे बालको ! क्रोध करना पाप है। क्रोधी दुर्गति होती है। क्रोध में आदमी की बुद्धि जाती है। क्रोधी को भले बुरे का ज्ञान नहीं रहता। क्रोधी का मन सदा दुःख में डूबा रहता है। उससे कोई मेल नहीं रखता और न किसी का जी उससे बातें करने को चाहता है इसलिए क्रोध कभी नहीं करना चाहिये।

क्रोध कषाय कभी मतकरो, क्षमाभाव नित चितमें धरो

## प्रश्नावली

१—क्रोध किसे कहते हैं ?
२—क्रोध करना अच्छा है या बुरा ? बुरा है तो क्यों ?
३—क्रोध का बुरा फल किसने पाया है ?
४—दीपायन मुनि की कथा अपने शब्दों में सुनाइये ?

## पाठ ६ मान (कषाय)

मान घमंड को कहते हैं, घमंडी का सिर नीचा होता है।

रावण लंका का राजा था। वह बड़ा अभिमानी था। एक समय रामचन्द्र, लक्ष्मण और सीता वन में घूम रहे थे। एक दिन रावण सीता को वन में अकेली देख कर धोखे से उठा ले गया।

उसके भाई बन्धुओं ने सीताजी को लौटा देने के लिए बहुत समझाया पर उसने एक न मानी। घमंड में आकर कहने लगा—'रामचन्द्र हमारा क्या कर सकते हैं? हम बड़े बलवान् हैं।'

रावण की राणी मन्दोदरी ने भी उसे बार-बार समझाया परन्तु उसने एक न मानी। अभिमान में आकर बोला—'एक बड़े राजा की रानी होकर ऐसी कायरता की बातें क्यों कर रही हो? रामचन्द्र मेरे बल और ताकत के सामने क्या चीज हैं?'

रावण की इस नीति का पता रामचन्दजी को चल गया, उन्होंने अपार सेना लेकर लंका पर चढ़ाई कर दी। उस समय भी रावण के मित्रों ने उसे बहुत समझाया। परन्तु रावण ने एक न मानी। ठीक है नाश के समय बुद्धि उल्टी हो जाती है। घमंड में आकर रावण ने रामचन्दजी को भी कहला भेजा' ,राम लक्ष्मण कौन होते हैं? यदि उनमें कुछ बल है तो हम से लड़ें।

राम और रावण में खूब लड़ाई हुई। एक
करके रावण के बहुत से भाई-बन्धु मारे गये
बहुत से कैद हो गये। अन्त में रावण भी मारा गया
उसके ऐसा कलंक का टीका लगा कि वह आज त-
न मिटा।

बालको! देखो अभिमान का फल कितना बु-
होता है। अभिमान में आकर रावण ने अपना,
सगे और राज्य का नाश कर डाला। अभिमानी
कोई बात करना नहीं चाहता। उसके सब दुश्मन
जाते हैं। सब उसका पतन चाहते हैं। इसलिए
अभिमान नहीं करना चाहिये।

'मान कषाय सदा तुम तजो।
विनय भाव को निश दिन भजो

प्रश्नावली

१—मान किसे कहते हैं?
२—मान करने से क्या क्या हानियाँ होती हैं?
३—मान कषाय का कुफल किसने भोगा?
४—रावण की कथा जो आपने इस पाठ में पढ़ी है अपने शब्दों में सुनाइये?
५—'नाश के समय बुद्धि उल्टी हो जाती है।' इस वाक्य से आप क्या समझते हो?

—०—

## पाठ ७ मायाचार (कषाय)

माया छल कपट को कहते हैं अर्थात् मन में और वचन में कुछ और, करे कुछ और। मायाचारी पुरुष का कोई विश्वास नहीं करता।

पटना नगर में एक सेठ रहते थे। वे बड़े ज्ञानी, दानी और धर्मात्मा थे। उनके महल में एक मन्दिर था। उसमें प्रतिमा के ऊपर रत्न जड़ित छत्र लगा था किसी सूर्य नामक चोर को उस छत्र का पता चल गया, उसने अपने मन में सोचा कि कोई ऐसा उपाय करना चाहिए जिससे यह छत्र हाथ लग जाय। परन्तु चोर का मन्दिर तक पहुँचना कठिन था।

उस चोर ने कपट से एक ब्रह्मचारी का रूप धारण किया और इतना ढोंग फैलाया कि थोड़े ही दिन में उस कपटी की विद्या और तप की प्रशंसा सारे देश में फैल गई। एक दिन वह कपटी पटना नगर में आ पहुँचा। सेठजी ने भी उसके आने की खबर सुनी। वे अपनी मित्र-मण्डली समेत मिलने को आये और दर्शन के लिये उसे अपने मन्दिर में ले गये।

सेठजी ने उसे धर्मात्मा समझ अपने मन्दिर में रख लिया। कुछ दिनों बाद सेठ जी को कुछ काम से

बाहर जाना पड़ा। जाते समय उन्होंने मन्दिर रखवाली का भार उस ब्रह्मचारी को सौंप दिया। कपटी ब्रह्मचारी मन ही मन में बड़ा खुश हुआ, ऊपर से मना करने लगा। सेठजी को उसके पाप कुछ पता न था, उन्होंने जोर देकर उस कपटी रखवाली के लिए राजी कर ही लिया।

सेठजी परदेश को चल दिये। उनके जाते ही ढोंगी की बन आई। आधी रात का समय था। उस अनमोल रत्न-जड़ित छत्र को चुरा कर मन्दिर भाग निकला। परन्तु पाप नहीं छुपता। रास्ते में पहरेदारों ने उसे भागते हुए देख लिया। वे उसे पकड़ने के लिए पीछे दौड़े। ब्रह्मचारी बहुत दूर नहीं जा पाया था कि पकड़ा गया। उसे घोर लज्जा में डूबना पड़ा।

सेठजी बहुत दूर नहीं गये थे। उन्हें इस घटना का पता चल गया। आकर उन्होंने इस कपटी को छुड़ा दिया और एकान्त में उसे शिक्षा देकर अपने से अलग कर दिया।

बालको! देखो—इस कपटी ने ब्रह्मचारी का पवित्र भेष धारण करके कितना नीच काम किया। पर ज्यों ही उसका कपट खुला तो उसको कपट का

ना बुरा फल मिला। कपटी का कभी कोई
वास नहीं कर सकता सब उसको झूठा और दगा-
। समझते हैं और उसको बुरी निगाह से देखते हैं।
लिए भूलकर भी कपट नहीं करना चाहिए।
ाचार कभी मत करो, सरल स्वभाव सदा चित धरो

### प्रश्नावली

–मायाचार किसे कहते है ?
–माया चार करने से क्या-क्या हानियाँ होती हैं ?
–सूर्य नामक चोर की कथा अपने शब्दों में सुनाइये ?
–सेठजी ने चोर के छुड़ाने में अच्छा किया या बुरा ?

—o—

## पाठ ८ लोभ (कषाय)

लोभ लालच को कहते हैं, लोभ पाप का मूल है।
एक दिन एक बूढ़ा और भूखा सिंह तालाब में
ाहा धोकर तालाब के किनारे आ बैठा। उसके हाथ
ं सोने का कड़ा था। इतने में एक कंगाल ब्राह्मण
उधर आ निकला और सिंह को वहाँ बैठा देखकर
ठिठक गया। उसको डरा हुआ देखकर सिंह ने कहा
'महाराज मैं यहाँ सोने का कड़ा दान करने के लिए

बैठा हूं । आप यहां से चले जाइये, यह सुनकर ने सोचा, आज मेरे भाग जागे, मालूम होता है। परन्तु कहीं यह धोखे की टट्टी तो नहीं ! फिर सोचा 'बिना कष्ट के सुख नहीं मिलता ।'

यह सोच कर ब्राह्मण बोला 'दिखाइए कड़ा कहं है ?' सिंह ने हाथ पसार कर उसे कड़ा दिखा दिया। उसे देखकर ब्राह्मण के मन में लालच आ गया। लेकिन वह बोला—'तुम जीवों को मार कर खाते हो मैं तुम्हारा विश्वास कैसे करूँ ?'

सिंह ने कहा—'अब मैं बूढ़ा हुआ, शरीर और इन्द्रियों में बल नहीं रहा, तुम मेरा विश्वास क्यों नहीं करते ? मैंने जवानी में बहुत पाप किये हैं इसलिए, दान-पुण्य करके मैं उन पापों को दूर करना चाहता हूं। तुमको दुखी जानकर यह कड़ा देना विचारा है। आओ इस तालाब में स्नान कर इस कड़े को ले लो।

लोभ का मारा ब्राह्मण ज्योंही स्नान करने को तालाब में घुसा कि वह कीचड़ में फंस गया। उसको फँसा देख सिंह धीरे-धीरे उधर बढ़ा और पास पहुँच कर उसने उस लालची की गर्दन दबोच ली, ब्राह्मण पछता कर मन में कहने लगा 'मैं लोभ में पड़कर इस की बात में आया', ब्राह्मण इसी सोच विचार में था

कि सिंह उसे हड़प कर गया।

प्यारे बालको! देखो लोभ का फल कैसा बुरा है। लोभ के कारण ब्राह्मण ने अपने प्राण तक गँवा दिये। लोभी को कोई विवेक नहीं रहता। उसकी सब निन्दा करते हैं। इसलिए लोभ नहीं करना चाहिए।

शिक्षा—बालको! तुम क्रोध, मान, माया और लोभ की कथायें पढ़ चुके हो। पापी जीव इन्हीं चारों के वश में होकर संसार में अनेक कष्ट उठाया करते हैं। इन्हीं चारों को कषाय कहते हैं, क्योंकि यह आत्मा को दुःख देते हैं और आत्मा के स्वभाव को बिगाड़ देते हैं।

## प्रश्नावली

१—लोभ किसे कहते हैं?

२—लोभ करने से क्या-क्या हानियाँ होती हैं?

३—लोभ कषाय का कुफल किसने भोगा?

४—ब्राह्मण की कथा जो आपने इस पाठ में पढ़ी है, अपने शब्दों में सुनाइये?

५—नाश के समय बुद्धि उल्टी हो जाती है, इस वाक्य से आप क्या समझते हैं?

६—कषाय किसे कहते हैं?

७—कषाय कितने होते हैं?

८—ये कषाय क्यों कहलाते हैं?

## पाठ १ दर्शन-विधि

बालको! पहले भाग में तुम पढ़ चुके हो। दिशा मैदान आदि क्रियाओं से निवट, शुद्ध ताजे से स्नान कर, शुद्ध सादा मोटा स्वदेशी वस्त्र पहन मन्दिर में जाओ और वहाँ भगवान् के दर्शन करो। इस पाठ में तुम्हें दर्शन विधि बतलाते हैं।

घर से मन्दिर जाते समय प्रासुक, लौंग, चावल आदि द्रव्य जरूर ले जाना चाहिये। मन्दिर में जाते हुए रास्ते में कीड़े-मकोड़े, मल-मूत्रादि से बचते हुए जाना चाहिये जिससे जीवों की रक्षा हो और अपनी पवित्रता बनी रहे। कपडे के जूते पहनो या नंगे पाँव जाओ। मन्दिर जाकर हाथ पाँव धोओ, फिर विनय के साथ 'जय जय' शब्द कहते हुए श्री जी की प्रतिमा के सामने खड़े होकर अपने हाथ में लाये हुए द्रव्य को चढ़ाओ। यदि अक्षत चढ़ाना है तो यह छन्द बोलो—

तन्दुल धवल पवित्र अति नाम सुअक्षत तास।
अक्षत से जिन पूजिये, अक्षय गुण प्रकाश॥

ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तयेऽक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यदि कोई और द्रव्य चढ़ाना है तो उसका छन्द और मंत्र पढ़कर उस द्रव्य को चढ़ाओ। फिर हाथ जोड़े हुए भगवान् की तीन प्रदक्षिणा देते हुए प्रत्येक दिशा में तीन आवर्त और एक शिरोनति करो। अपने जोड़े हुए हाथों को अपनी बाईं ओर से दाहिनी ओर जाना 'आवर्त' है फिर झुके हुए मस्तक पर इन जुड़े हुए हाथों का लगाना शिरोनति है।

प्रदक्षिणा देते समय नीचे लिखी विनती पढ़ो—

[ हरिगीतिका छन्द ]

प्रभु पतित पावन, मैं अपावन,
चरण आयो शरण जी।
यह विरद आप निहार स्वामी
मेटो जामन मरण जी।
तुम ना पिछानो आन मानो,
देव विविध प्रकार जी।
या बुद्धि सेती निज न जानो,
भ्रम गिनो हितकार जी॥
भव विकट वन में करम बैरी,
ज्ञान धन मेरो हरो।
तब इष्ट भूलो भ्रष्ट होय,
अनिष्ट गति धरतो फिरो॥

धन घड़ी यह धन दिवस ये ही,
धन जन्म मेरो भयो।
अब भाग मेरो उदय आयो,
दरश प्रभु को लख लियो ॥
छवि वीतरागी नग्न मुद्रा,
दृष्टि नासा पै धरें।
वसु प्रतिहार्य अनन्त गुण युत,
कोटि रवि छवि को हरें ॥
मिट गयो तिमिर मिथ्यात मेरो,
उदय रवि आतम भयो।
मो उर हरष ऐसो भयो मनो,
रंक चिन्तामणि लयो ॥
मैं हाथ जोड़ नवाय मस्तक,
वीनऊँ तुम चरण जी।
सर्वोत्कृष्ट त्रिलोकपति जिन,
सुनो तारण तरण जी ॥
जाचू नहीं सुरवास पुनि नरराज
परिजन साथ जी।
'बुध' याचहूँ तुम भक्ति भव-भव,
दीजिये शिवनाथ जी ॥

प्रदक्षिणा के बाद प्रतिबिम्ब के सामने खड़े हो स्तुति को पूरी करो। हाथ लटका कर ध्यान करते हुए नौ वार णमोकार मन्त्र पढ़ो। फिर विचार करो कि 'प्रभु! जैसे आप शुद्ध हैं वैसे ही मैं भी हो जाऊँ। संसार से पार हो जाऊँ।' फिर दण्डवत् वन्दना सहित नमस्कार करो।

यदि मन्दिर में किसी और वेदी में भगवान् विराजमान हों तो वहाँ जाकर भी णमोकार मन्त्र और चौवीस महाराज के नाम पढ़ो। कोई स्तुति पढ़नी हो तो वह पढ़ो। फिर नमस्कार करो। दर्शन करने के बाद नीचे लिखा छन्द पढ़कर दोनों आँखों और मस्तक पर गन्धोदक लगाओ।

'जिन तन परम पवित्र, परस भई जग शुचि कारण।
सो धारा मम नित्य, पाप हरो पावन करो॥'

गन्धोदक लेते समय इस बात का ध्यान रखो कि वह जमीन पर न गिरने पाये तथा अशुद्ध हाथों से न लिया जाय।

यह सब काम कर चुकने के पीछे जिनवाणी को नमस्कार कर शास्त्र पढ़ो, शास्त्र सभा होती हो तो शास्त्र सुनो।

यह भी ध्यान रहे कि मन्दिर में कोई घरेलू

चर्चा, हँसी, लड़ाई, खाने पीने की बातें भूलकर भी न करो, क्योंकि ऐसा करने से पाप होता है। मन्दिर में सबसे मैत्री भाव रखना चाहिए।

बालको! दर्शन करने का यही फल यही है कि हमारे भाव पवित्र हों, हमें सुख-शान्ति मिले। दर्शन करने से पाप नाश हो जाते हैं, भाव शुद्ध होते हैं और आत्मबल बढ़ता है।

## प्रश्नावली

१—मन्दिर में दर्शन करने के लिये जाते समय किन किन बातों का ध्यान रखना चाहिये?

२—मन्दिर में प्रवेश करते समय कौन शब्द और मन्त्र बोलना चाहिये?

३—प्रदक्षिणा, शिरोनति और आवर्त किसे कहते हैं?

४—प्रदक्षिणा देते समय जो स्तोत्र पढ़ा जाता है वह सुनाइए सुनाइये?

५—गन्धोदक किसे कहते हैं, गन्धोदक लेते समय जो छन्द पढ़ा जाता है सुनाइये?

६—गन्धोदक लेते समय किसी बात का विशेष ध्यान रखना चाहिये?

७—दर्शन कर चुकने के बाद मन्दिर में क्या २ करना चाहिये?

८—कौन २ सी बातें मन्दिर में नहीं करनी चाहिये।

९—दर्शन करने से क्या फल मिलता है?

—•—

## पाठ १० हिंसा

प्रमाद से अपने या किसी दूसरे के प्राणों को घात करने को या दिल दुखाने को हिंसा कहते हैं।

किसी नगर में धनपाल नाम का सेठ रहता था। वह बड़ा धनवान् और गुनवान् था। राज दरबार में भी उसकी बड़ी पूछ थी, उसकी स्त्री का नाम सुशीला था, वह बड़ी पतिव्रता थी।

भाग्य से उसके दो लड़के हुए। एक का नाम गुणपाल, दूसरे का नाम महिपाल था। गुणपाल बड़ा सन्तोषी और धर्मात्मा था। परन्तु महिपाल को कुसंगति के कारण जुए की बुरी लत पड़ गई थी। महिपाल को उसके पिता जी ने कई बार समझाया, पर उसकी समझ में एक न आई। कुछ दिनों बाद धनपाल सेठ मर गये। अब गुणपाल ही घर का कारो बार करने लगा। धर्म बुद्धि गुणपाल ने अपने भाई महिपाल को जुआ छोड़ने को कई बार कहा, पर उसके एक न जची।

एक दिन जुए के दाव लगाने के लिए महिपाल घर से कुछ जेवर निकाल कर ले गया और उसे जुए में हार गया। गुणपाल को इस बात का पता लगा। उसने फिर

प्रेम से अपने भाई को समझाया और उसे आगे जुआ खेलने से रोका। महिपाल पहिले ही से हार के कारण क्रोध से भरा बैठा था। गुणपाल के समझाने पर वह और भड़क उठा। मारे क्रोध के उसका चेहरा लाल हो गया, बुद्धि बिगड़ गई, विवेक जाता रहा। बिना सोचे समझे झट तलवार निकाल गुणपाल के सिर को उसके धड़ से जुदा कर डाला।

यह समाचार नगर के कोतवाल को मालूम हुआ। वह महिपाल को पकड़कर राजा के पास लेगया। राजा ने जांच पड़तालके बाद फांसी पर चढाने का हुक्म दिया और राजा के नौकरों ने राजा की आज्ञा का पालन किया।

बालको! देखा महिपाल ने क्रोध में आकर अपने भाई गुणपाल के प्राणों का बिना कारण घात कर डाला, उसने हिंसा की। हिंसा के अपराध में उसे फांसी का दण्ड मिला, उसका सारा कुटुम्ब बरबाद हो गया।

हिंसा महापाप का कारण है इसलिये हिंसा भूलकर भी कभी नहीं करनी चाहिए।

'हिंसा पाप कभी मत करो,
सब जीवों पर करुणा करो।'

वड़ों का आदर करो, अश्लील चर्चा न छेड़ो। २

## प्रश्नावली

१—हिंसा करने में क्या-क्या हानियाँ होती हैं ?
२—हिंसा किसे कहते हैं ?
३—हिंसा के कुफल की कहानी जो तुमने पढ़ी हो अपने शब्दों में सुनाइये।
४—आप हिंसक बनना पसन्द करेंगे या अहिंसक ?

# पाठ ११ झूठ

जिस बात को जैसा देखा हो, जैसा सुना हो, या कहा हो उसको वैसा न कहना झूठ है। झूठ बोलने वाले दग़ाबाज़ कहलाते हैं।

कथा—सिंहपुर में राजा सिंहसेन राज्य करता था। उसकी रानी रामदत्ता थी, वह बड़ी चतुर थी। उसी नगर में श्रीभूति नाम का एक पुरोहित रहता था, वह बड़ा ठग था। अपने आपको वह, सत्यघोष,(सच बोलने वाला) कहा करता था। वह अपने जनेऊ में एक चाकू बांधे रहता और कहा करता 'भूल कर यदि कभी मैं झूठ बोल जाऊँ तो इस चाकू से मैं अपनी जीभ काट दूँ'। नगर के लोग उसका भरोसा करते थे। राजा उस पर विशवास करता था।

एक दिन सागरदत्त नाम का एक परदेशी व्यपारी सिंहपुर में आया। उसने भी सत्यघोष की प्रशंसा सुनी

और अपने पाँच रत्न उसके पास जमा कर रत्नद्वीप को चला गया। वहाँ उसे बहुत सा धन लाभ हुआ। जब लौटकर आने लगा तो जहाज फट गया, इससे उसका सब धन समुद्र मे डूब गया। वहाँ से जान बचा कर वह सत्यघोष के पास आया और नमस्कार कर अपने रत्न मांगे। सत्यघोष तो झूठा ठग था ही। कहने लगा—'मैं तुम्हें पहचानता ही नहीं। तुम कहां के रहने वाले हो? तुम्हारे रत्न मेरे पास कहां से आये? क्या तुम पागल हो गये? किसी और के यहाँ रख गये होगे। यहां भूल से माँगने चले आये हो' कहकर उस बेचारे को उसने अपने मकान से निकाल दिया।

बेचारे सागरदत्त की राजा के यहाँ भी कोई सुनवाई न हुई। अब सागरदत्त रोता हुवा दिन भर नगर में घूमा करता और फिरता रहता। वह रात को राजा के महल के पीछे एक वृक्ष के ऊपर चढ़कर पुकार करता, 'सत्यघोष ने मुझे लूट लिया, मेरे रत्न मार लिये।'

एक दिन रानी रामदत्ता को सागरदत्त का रोना सुनकर दया आगई। उसने राजा से इसका न्याय करने का भार अपने ऊपर ले लिया। सवेरा होते ही रानी ने पुरोहित को चौसर खेलने के लिए अपने महल में

बुलाया, और चौसर खेलने लगीं। रानी बहुत चतु[illegible] थीं। पहली बाजी में पुरोहित को अंगूठी जीत ली पुरोहित जी को तो खेल में लगाये रखा, उधर दासी को अंगूठी देकर चुपके से उससे कहा कि सत्यघोष के घर जाकर उसकी स्त्री से कहो—पुरोहितजी ने यह अंगूठी भेजी है और परदेशी सागरदत्त के पांच रत्न मंगवाए हैं।'

पुरोहित की स्त्री ने अंगूठी को पहचान कर दासी का विश्वास कर लिया और सागरदत्त के पाँचों रत्न उसे दे दिए। दासी ने चुपचाप पाँचों रत्न रानी को दे दिए। रानी ने जब खेल बन्द कर दिया तो पुरोहित अपने घर चले गए। इधर रानी ने राजा के सामने सागरदत्त को बुलाया और उसके पाँचों रत्नों को और बहुत से रत्नों के साथ मिलाकर उससे कहा--यदि इनमें आपके रत्न हों तो पहचान लीजिए, सागरदत्त ने तुरन्त अपने रत्नों को पहचान कर उठा लिया।

राजा ने सत्यघोष को बुलाया, वह पापी ठग शरम के मारे मुख नीचा करके खड़ा हो गया। उसकी सब इज्जत जाती रही। राजाने उसे कड़ा दण्ड दिया, मर कर खोटी गति में गया।

बालको [illegible] त्यघोष ने रत्नों को

रखते हुए भी जान बूझकर कहा था कि 'मेरे पास रत्न नहीं हैं' उसने झूट बोला, झूट बोलने से उसकी सारी इज्जत जाती रही और उसको कड़ दण्ड भोगना पड़ा। झूट बोलने वाले का कोई विश्वास नहीं करता, झूठा आदमी यदि कभी सच भी बोलता है तो भी उसकी कोई सच प्रतीति नहीं करता।

'झूठ का मुँह सदा काला होता है और सत्य की सदा जय होती है' इसलिए झूठ बोलना महापाप है।

'झूठ वचन मुख से मत कहो।
सत्य धर्म को नित तुम गहो॥'

## प्रश्नावली

१—झूठ किसे कहते है?
२—सत्यघोष का हर कोई क्यों विश्वास करता था?
३—रानी ने सागरदत्त परदेशी के रत्नों का पता कैसे लगाया?
४—श्रीभूति पुरोहित का नाम सत्यघोष क्यों पड़ गया था?
५—झूठ बोलने से क्या क्या हानियाँ होती हैं?
६—सत्यघोष की कथा अपने शब्दों मे सुनाईये?
७—सत्यघोष को राजा ने क्या दण्ड दिया?

# पाठ १२ चोरी

बिना दिये किसी की गिरी, पड़ी, रक्खी या भूली हुई चीज को ले लेना, उठा ले जाना या उठाकर किसी दूसरे को देना चोरी है। चोरी करने वाले को चोर कहते हैं।

गङ्गाराम नाम का एक लड़का पाठशाला में पढ़ता था। एक दिन वह पाठशाला से एक चाकू चुरा लाया इस पर उसकी माता ने उसे कुछ भी न कहा और चाकू बेचकर उसे खाने के लिए सेव मोल ले दिये। गंगाराम को इस लालच से चोरी की बान पड़ गई। वह हर रोज पाठशाला से कोई न कोई चीज चुराकर लाता और अपनी माता को दे देता। माता उसे कुछ भी न कहती। उन चुराई हुई चीजों को बेच कर उसे खाने को मिठाई तथा फल मोल ले देती। इस प्रकार करते-करते गंगाराम पक्का चोर हो गया और बाजार, मुहल्ले तथा ग्राम में बड़ी-बड़ी चोरियाँ करने लगा।

एक दिन गंगाराम ने चोरी करते एक आदमी को जान से मार डाला और वह पकड़ा गया। उसे फांसी का हुक्म हुआ। जब फांसी पर चढ़ने का समय हुआ तो उसकी माता भी उससे मिलने के लिए वहाँ आई। गंगाराम ने [illegible] के पास आकर [...]
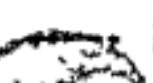
बहाने से उसकी नाक काट डाली। माता की चिल्लाहट सुनकर सब लोगों ने गंगाराम को बहुत बुरा कहा।

इस पर गंगाराम बोला—'भाई मुझे क्यों बुरा कहते हो? जब मैं पाठशाला में पढ़ता था और पहले चाकू चुरा कर लाया था, तब इसने मुझे नहीं रोका और इसी तरह मुझे चोरी करने को उकसाया। यदि यह मुझे पहले दिन डांट देती तो आज यह नौबत ही न आती।' इस पर लोगों ने गंगाराम की माता को बहुत बुरा कहा।

बालको! देखो गंगाराम को केवल एक चाकू के चुराने से चोरी की खोटी बान पड़ गई। अन्त में चोरी के कारण उसे कड़ा प्राण दण्ड मिला। चोरी करना बड़ा पाप है। चोर की कोई प्रतीति नहीं करता। उसे कोई अपने पास बैठने तक नहीं देता। इसलिए जरा-सी भी चोरी भूल कर भी मत करो।

विना दिये पर धन मत कहो। चोरी से नित डरते रहो।

**प्रश्नावली**

१—चोरी किसे कहते हैं?

२—सड़क पर पड़े पैसे को उठाने में चोरी है या नहीं? पैसे को उठा लोगे या नहीं?

३—चोरी करने से क्या २ हानियाँ होती हैं?

४—गंगाराम ने अपनी माँ की नाक क्यों काटली? उसने उसे क्या दिखाया?

## पाठ १३ कुशील

कुशील—पराई स्त्री को बुरी निगाह से देखने को या गन्दी और चारित्र बिगाड़ने वाली बुरी बातें करने को कुशील कहते हैं। इस पाप के करने वाले को लुच्चा या बदमाश कहते हैं।

पोदनपुर में राजा अरविन्द थे। उनका मन्त्री विश्वभूति था। उसके दो पुत्र थे। बड़े का नाम कमठ और छोटे का नाम मरुभूति था। मरुभूति अपने गुण और चारित्र के बल के कारण राजा का बड़ा प्यारा था। पर कमठ बड़ा दुष्ट और मूर्ख था। मरुभूति की स्त्री का नाम वसुन्धरा था, वह बड़ी रूपवती थी।

विश्वभूति मन्त्री जब मन्त्री-पद को छोड़ वन में तपस्या के लिए चले गए, तो राजा ने योग्य जान मरुभूति को अपना मन्त्री बना लिया।

एक समय राजा अरविन्द अपनी सेना और मरुभूति मन्त्री को लेकर बैरी को जीतने के लिए बहुत दूर परदेश गये। पीछे एक दिन कमठ ने मरुभूति की स्त्री वसुन्धरा को देखा और वह अपने आपे में न रहा। उसके मित्र कलहंस ने उसे बहुत समझाया कि दूसरे की स्त्री माता के बराबर है। छोटे भाई की स्त्री कन्या के [illegible] होती है परन्तु पापी कमठ

चित्त में एक न जमी ।

एक दिन पापी कमठ नगर के बाहर लता मंडप में पड़ा हुआ था । उसने बीमारी का बहाना बनाकर वसुन्धरा को बुलाया । वह बड़ी भोली थी । कमठ के कपट को न समझ सकी, लता मंडप में पहुँचते ही बदमाश कमठ ने उसका शील भ्रष्ट कर डाला ।

वैरियों को जीत राजा अरविन्द पोदनपुर में बड़ी धूम-धाम के साथ लौट आए । सब लोगों से कमठ का अन्याय सुनकर राजा ने मरुभूति से पूछा कि 'इस पापी को कौन सा दण्ड देना उचित होगा ।'

मरुभूति बड़ा उदारचित और क्षमावान था उसने कहा 'अपराधी को एकबार क्षमा कीजिए' मरुभूति का यह उत्तर सुनकर राजा चकित हो गए और कहने लगे जो अपराधी है उस पर क्षमा करना राजा को शोभा नहीं देता ।' मरुभूति अपने घर चले गए ।

राजा ने कमठ का मुख काला करके गधे पर चढ़ा कर नगर के गली कूचों में फिरा कर उसे अपने राज्य से निकाल दिया ।

बालको ! देखो पापी कमठ ने वसुन्धरा का शील बिगाड़ कुशील का सेवन किया, इस कारण उसे कितना कष्ट उठाना पड़ा । सारे नगर में उसकी बदनामी हुई, उसका धन दौलत सब लूट लिया गया और

उसे देश से निकलवा दिया गया। कुशील पुरुष को सब बुरा समझते हैं और उसे घृणा की दृष्टि से देखते हैं। इसलिए कभी भी कुशील का सेवन नहीं करना चाहिए और सदा अपने चाल चलन को खोटे बालकों की संगति से बचाकर पवित्र रखना चाहिए।

### प्रश्नावली

१—कुशील के सम्बन्ध में जो कथा आपने पढ़ी है वह सुनाइये?
२—कलहंस ने कमठ को क्या कहकर समझाया?
३—राजा ने कमठ को क्या दण्ड दिया?
४—कुशील सेवन से क्या २ हानियां होती हैं।
५—आप कैसे लड़कों की संगत करना पसन्द करेंगे?

---

## पाठ १४ परिग्रह

परिग्रह—जमीन, मकान धन, दौलत, जेवर वगैरह से मोह रखना और इनको इकट्ठा करने की लालसा रखना परिग्रह है। इस पाप के करने वाले को कंजूस, लोभी और आडम्बरी कहते हैं।

किसी नगर में लुब्धदत्त नाम का एक सेठ रहता था वह एक समय व्यापार के लिए परदेश गया। वहाँ पर उसने बहुत धन कमाया। एक दिन अपना धन ले कर वह अपने देश लौट रहा था, कि रास्ते में चोरों ने उसे लूट लिया। बेचारा दुखी होकर वहां से चला

आया, रास्ते में एक ग्वालिए से कुछ मट्ठा मांगा, ग्वालिए ने उसे कुछ मट्ठा दे दिया। मट्ठे के ऊपर थोड़ा सा मक्खन तिर रहा था, लुब्धदत्त ने ज्योंही मट्ठा पिया कि उसमें से कुछ मक्खन उसकी मूछों में लग गया और कुछ उसके गिलास में लगा रहा।

लुब्धदत्त ने इस मक्खन को पोंछ कर रख लिया। अब उसकी लालसा इतनी बढ़ी कि वह प्रति दिन मट्ठा लाता और उसमें से मक्खन निकाल लेता। कुछ दिनों बाद उसने हंडिया भर कर मक्खन जमाकर लिया। एक दिन वह अपनी झोंपड़ी में चारपाई पर लेटा हुआ था सर्दी का मौसम था। घी की हंडिया पांव की ओर छींके पर लटकी हुई थी, लुब्धदत्त ने सेकने के लिए अपनी चारपाई के पास अग्नि जला रखी थी लेटे२ वह विचार में मग्न था कि हंडिया के घी को बेच कर जो दाम आवेंगे उससे और धन पैदा करूँगा। धन पैदा कर सेठ बन जाऊँगा, फिर राजा महाराजा होने की कोशिश करूँगा, तब अपने महल में सोया करूँगा और जब मेरी स्त्री पैर दबावेगी तब लात मार कर कहूँगा 'तुम्हें पांव भी दबाने नहीं आते।'

यह विचार करते-करते ज्यों ही उसने अपना पांव फटकारा कि छींके पर लटकी हुई घी की हंडिया आग

पर गिर पड़ी। घी के संजोक से अग्नि भड़क उठी और चारों ओर फैल कर झोंपड़ी में लग गई। बेचारा लुब्धदत्त निकल कर भाग न सका और जल कर राख हो गया तथा खोटे भावों से मरकर खोटी गति में गया।

प्यारे बालको! देखो लुब्धदत्त ने बड़ा भारी लोभ किया, उसको अपने प्राण देने पड़े। अधिक लालसा रखना पाप है। परिग्रही के विवेक जाता जाता रहता है। उससे धर्म का पालन नहीं हो सकता, इसलिए मनुष्य को चाहिये कि थोड़े में ही सन्तोष करे अपने जीवन को सफल करे और लुब्धदत्त की तरह लालसा के चक्कर में पड़कर अपने जीवन को न बिगाड़े।

तृष्णा अधिक कभी मत करो पाप परिग्रह को परिहरो

बालको! तुम हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह की कथायें तुम पढ़ चुके हो। उसमें तुम्हें मालूम हो गया है कि यह कितने दुखदाई हैं। इन हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह को ही पांच पाप कहते हैं।

यह पाप बड़े दुखों के देने वाले हैं इसलिए सुख चाहने वाले पुरुषों को हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह इन पांचों पापों को त्याग कर धर्म का पालन करना उचित है।

किसी से वैर भाव न करो।

**प्रश्नावली**

१—परिग्रह किसे कहते हैं ?
२—लुब्धदत्त की कथा अपने शब्दों में सुनाइये ?
३—इस कथा से तुम्हें क्या शिक्षा मिलती है ?
४—अधिक तृष्णा करना, अच्छा है या बुरा ? बुरा है तो क्यों ?
५—पांच पाप कौन से हैं उनके नाम बताइये ?
६—इन पापों के करने से क्या हानि होती है।

—०—

# पाठ १५ शिक्षा

(छन्द चौपाई १५ मात्रा)

सब जीवन पर करुणा धरै, अनृत तज चोरी नहीं करै,
लोभ कुशील तजै मद खोय, सो सच्चा धर्मात्मा होय।
दूषण तज गुण भूषण धार, क्रूर भाव मन का परिहार
कटुकवचन मुख कबहून भाख,दीनदुखी पर करुणा राख
मातापिता गुरु हितकरजान,इनसम हितकारी नहिं आन
तातैं इनकी आज्ञा मान, जातैं होय दुख की हान ॥३
गुरु उपदेश सुनै दे कान, ताके हृदय बढ़त अति ज्ञान।
जे सुनते नहिं हित उपदेश, ते बालक दुख सहत हमेश।
सब छात्रन से राखहु मेल, खोटे लड़कन संग मत खेल।
छात्रन से झगड़ा मत करो, सबसे मित्रभाव नित धरो
पर निंदा मुखपर मत लाव अपनी बड़ाई का तज भाव
छात्रनकी चुगली मत करो, कुवचन मुखपर कबहु नधरो

पढने में नित ध्यान जु धरै, सो विद्या धन संचय करै।
विद्या धन उत्तम जग मांहि, यातें भवसागर तर जांहि।
बालपने जिसने नहिं पढ़ा, पढ़ लिखकर धन में नहिं बढ़ा
पाप तजे नहिं बुढ़ापे मांहि, तस तीनों पन ऐसे जांहि।
तातें बालकपन में पढो, पढ़ लिखकर धन सुख से बढ़ो
अरु तज पाप धरम धर गहो, तातें अतिशय सुखयश लहो

### प्रश्नावली

१—सच्चा धर्मात्मा कौन है ?
२—विद्या पढ़ने से क्या क्या लाभ होते है ?
३—इस पाठ से आपको क्या शिक्षाएं मिलती हैं ?

—०—

## पाठ १६ वीर भामाशाह

बादशाह अकबर से हारकर महाराणा प्रताप एक जंगल में चले गए। वे वहां एकान्त में बैठे बैठे कुछ सोच रहे थे उस समय एक हृष्ट-पुष्ट आदमी आता हुआ दिखाई दिया। उसने आते ही कहा—'जय हो महाराणा प्रताप की।' महाराणा ने आंख उठाकर देखा। उनकी आंखों से टप-टप आंसू गिरने लगे। उस पुरुष ने पांव पकड़ लिए और बोला—'महाराणा जी! इतने चिन्तित क्यों हैं ?'

महाराणा ने उत्तर दिया—भामाशाह, मैं क्या

बताऊँ, इस समय खाने को तो कण तक न रहा! बाल-बच्चे भूखे मर रहे हैं, ऐसी हालत में शत्रु से लड़ना भला कैसे बने ? भामाशाह ने उत्तर दिया— 'प्रभो ! आप इस बात की जरा भी चिन्ता न करें। देखिये यह क्या है ?' तुरन्त ही सोना, रुपये और जवाहरात से लदी गाड़ियां वहां आ खड़ी हुईं। महाराणा प्रताप चकित हो गये, वे बोले—'भामाशाह इतना धन कहां से ले आये।' भामाशाह ने उत्तर दिया— 'महाराणा जी यह सब आपका ही है, मेरा नहीं, मैं तो केवल इसका रखवाला हूं। आप सेना तैयार करें और राज्य को फिर से जीतें। यह सुनकर महाराणा की आंखों से प्रेम के आंसू गिरने लगे। महाराणा ने प्रतिज्ञा की—कि जब तक मैं अपना पूरा राज्य न जीतूं तब तक मैं सोने चांदी के थाल में न जीमूंगा। घास के बिछौने पर सोऊंगा और पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करूंगा। अन्तमें भामाशाह की सहायता से महाराणा ने अपना राज्य जीत लिया भामाशाह सच्चा वीर जै गृहस्थ था, धर्मको पालते हुए नीति से धन कमाता था वह राजभक्त था।

बालको ! समय पड़ने पर तुम भी सदा वी भामाशाह की तरह अपने देश के निमित्त अपना स कुछ न्योछावर करने के लिए तैयार रहो।

## प्रश्नावली

१—भामाशाह कौन था? वह कैसा जैन था?
२—महाराणा प्रताप की आँखों से आँसू क्यों बह रहे थे?
३—भामाशाह ने महाराणा प्रताप की क्या सहायता की?
४—महाराणा प्रताप ने क्या प्रतिज्ञा की थी? प्रतिज्ञा किसे कहते हैं?
५—भामाशाह के चरित्र से आपको क्या शिक्षा मिलती है?

---

# पाठ १७ धर्म क्या है?

संसार में सब प्राणी सुख चाहते हैं और दुख से डरते हैं। कोई जीव नहीं चाहता कि उसे किसी तरह का दुःख हो।

हर एक मनुष्य जानता है कि पुण्य से सुख होता है और पाप से दुःख होता है। इसलिए अगर तुम सुखी होना चाहते हो तो पांच पापों का और चार कषायों का त्याग करो।

पांच पाप ये हैं—(१) हिंसा-जीवों का सताना, (२) झूठ बोलना ३. चोरी करना (४) कुशील-दूसरे की स्त्री को बुरी निगाह से देखना, (५) परिग्रह-जरूरत से अधिक सांसारिक वस्तुओं को इकट्ठा करना। चार कषाय ये हैं—१. क्रोध (गुस्सा) २. मान (घमंड)

३. माया (कपट) ४. लोभ (लालच) इन पांच पाप और चार कषाय के त्यागने से न कोई तुम्हारा बैरी होगा और न तुमको कोई दुख उठाना पड़ेगा। पांच पाप और चार कषाय से हानि क्या है, यह तो तुम इस पुस्तक में पहले ही पढ़ चुके हो।

तुम देखते हो जेलखानों में कैदी भरे पड़े हैं वे सब इन पांच पापों और चार कषायों के कारण ही कैद की तकलीफ उठा रहे हैं। दुनिया में जो लड़ाई झगड़े होते हैं, उन सबकी जड़ ये पांच पाप और चार कषाय ही हैं।

इसलिए अगर तुम सच्चा सुख प्राप्त करना चाहते हो तो पांच पाप और चार कषायों को छोड़ना चाहिये।

धर्म वही है जो जीव को संसार के दुःखों से छुड़ा कर मोक्ष के उत्तम सुख में पहुँचाये।

प्रश्नावली

१—जीव क्या चाहते हैं और क्या नहीं चाहते?

२—संसार में दुःख के कारण क्या हैं?

३—धर्म शब्द से आप क्या समझते हैं? विस्तार से समझाइये।

४—पाप का अर्थ क्या है?

५—पाप क्यों छोड़ने चाहियें?

६—कषाय का क्या अर्थ है वे कितने हैं?

७—संसार में आपका सबसे प्रबल शत्रु कौन है?

## पाठ १८ अग्निभूति वायुभूति

कोशाम्बी नगरी में राजा अतिबल राज्य करते थे। उनके राज-पुरोहित का नाम सोमशर्मा था। उनकी स्त्री का नाम काश्यपी था। इनके अग्निभूति और वायुभूति नाम के दो पुत्र थे, परन्तु यह दोनों माता-पिता के लाड़ के कारण कुछ विद्या न पढ़ सके।

जब उनका पिता मर गया तो राजा ने विना जाने इन दोनों को अपना पुरोहित बना लिया। एक दिन एक परदेशी विद्वान् ब्राह्मण ने आकर वाद-पत्र राजा के महल के दरवाजे पर लटका दिया। वाद करने का हक पुरोहित को होता था राजा ने अग्निभूति और वायुभूति को वाद-पत्र लेने की आज्ञा दी। इन दोनों ने उसे लेकर फाड़ डाला। राजा जान गया कि दोनों मूर्ख हैं। राजा ने उनका पुरोहित-पद छीन लिया और सोमिल नाम के एक ब्राह्मण को अपना पुरोहित बना लिया।

इस बात से अग्निभूति और वायुभूति दोनों को अपनी मूर्खता पर बड़ा दुख हुआ, उसी समय उन्होंने विद्या पढ़ने के लिए दूर-देशान्तरों में जाने का पक्का इरादा कर लिया। उस समय उनकी माता ने कहा, प्यारे बेटो! [illegible] विदेश जाने का विचार

है तो तुम और कहीं न जाओ, सीधे राजगृह नगर में अपने मामा सूर्यमित्र के पास चले जाओ। वह राज-पुरोहित हैं और बड़े विद्वान हैं, वह तुम्हें बड़े प्रेम से पढ़ावेंगे।

अग्निभूति और वायुभूति ने माता की बात मान ली और दोनों राजगृही नगर में जाकर अपने मामा से मिले और अपना सारा हाल कह सुनाया, सूर्यमित्र ने सुनकर विचार किया कि ये अपने माता पिता के लाड-चाव के कारण मूर्ख रह गये। यदि मैं भी इन्हें वैसा ही लाड प्यार में रक्खूँगा तो यहाँ भी खेल कूद में मस्त हो जायेंगे और कुछ भी न पढ़ सकेंगे। इसलिए इनसे अपना असली भेद छुपाना चाहिए। यह सोचकर उनको कहा—'भाइयो ! मेरे तो कोई बहन नहीं है, भानजे कहां से आए ? मैं तुम्हारा मामा नहीं हूँ परन्तु यदि तुम पढ़ना चाहते हो तो भिक्षा मांगकर पेट भरा करो, मैं पढ़ा दिया करूँगा और थोड़े दिनों में अच्छे विद्वान् बना दूँगा।

दोनों भाई लाचार हो राजी हो गये और भिक्षा मांग कर पढ़ने लगे। थोड़े ही दिनों में वे पढ़ लिखकर सब शास्त्रों में विद्वान् हो गये। अब इन्होंने अपने घर लौटने का विचार किया और सूर्यमित्र से आज्ञा

मांगी। सूर्यमित्र का प्रेम उमड़ आया, दोनों को बड़े प्रेम के साथ वस्त्राभूषण देकर कहा—पुत्रो ! वास्तव में मैं तुम्हारा मामा हूँ। परन्तु यह सोचकर कि मोह में पड़कर तुम पढ़ नहीं सकोगे, मैं उस समय अनजान बन गया था। मामा ने बड़े प्रेम से उनको विदा कर दिया। दोनों अपने घर लौट आये। अपनी विद्या का चमत्कार दिखा कर अपने खोये हुए पुरोहित पद को फिर से पा लिया और बड़े आनन्द के साथ रहने लगे।

बालको ! इस कथा से तुम्हें शिक्षा लेनी चाहिये कि बिना विद्या पढ़े और बिना कुछ योग्यता प्राप्त किए मनुष्य का कहीं आदर नहीं होता और न राज सेवा आदि कामों में कोई मान बड़ाई की जगह मिल सकती है।

दोहा—'विद्या रूपी रतन से, हैं जो लोग विहीन।
वे हैं इस संसार में, सब द्रव्यों से हीन' ॥

## प्रश्नावली

१—अग्निभूति कौन थे ?
२—इनके पिता के मरने पर पुरोहित पद इनसे क्यों छीन लिया गया ?
३—सूर्यमित्र ने विद्या पढ़ाते समय अपना सम्बन्ध क्यों नहीं जतलाया ?
४—इस कथा से आपको क्या शिक्षा मिलती है ?

३—इस दोहे का अर्थ समझाइये।

विद्यारूपी.........विहीन।

वे.....................हीन॥

## पाठ १९ सद्भावना

भावना दिन रात मेरी, सब सुखी संसार हो।
सत्य संयम शील का व्यवहार घर-घर बार हो ॥१॥
धर्म का प्रचार हो अरु, देश का उद्धार हो।
मेरा प्यारा देश भारत, एक चमन गुलजार हो ॥२॥
रोशनी से ज्ञान की, संसार में प्रकाश हो।
धर्म के आचार से, हिंसा का जग से ह्रास हो ॥३॥
शान्ति अरु आनन्द का, हर एक घर में वास हो।
वीर-वाणी पर सभी, संसार का विश्वास हो ॥४॥
रोग भय अरु शोक होवें, दूर सब परमात्मा।
कर सकें कल्याण 'ज्योति', सब जगत की आत्मा ॥५॥

### प्रश्नावली

१—भावना से क्या प्रयोजन है? आपकी भावना कैसी होनी चाहिये?

२—ज्ञान न होने से क्या-क्या हानियाँ हैं? विस्तार पूर्वक बताइये।

३—आप ज्ञान को किस तरह प्राप्त कर सकते हैं?

४—सद्ज्ञान और कुज्ञान की परिभाषा कीजिये?

५—आत्मा को किस ज्ञान से सच्चा सुख प्राप्त हो सकता है?

# पाठ २० दान की महिमा

एक दिन श्रीकृष्ण श्री नेमिनाथ भगवान् के समवसरण में जा रहे थे। रास्ते में उन्होंने एक तपस्वी साधु को रोगी दशा में देखा। रोगी का सारा शरीर रोग से महाकष्ट पा रहा था उनकी यह दशा श्रीकृष्ण से देखी न गई। धर्म, प्रेम और दयाभाव के कारण हृदय कांप उठा, उन्होंने उसी समय जीवक नाम के प्रसिद्ध वैद्य को बुलाया और साधु को दिखलाकर उनके लिए औषधि पूछी। वैद्य के औषधि बताने पर श्री कृष्ण ने सब श्रावकों को उस औषधि की सूचना दे दी, ताकि जिस समय साधु आयें तो वह औषधि उनको दे दी जाय। थोड़े ही दिनों में इस इलाज से साधु महाराज को आराम हो गया। उनका सब रोग जाता रहा और उनका शरीर पहले से सुन्दर हो गया। इस औषधि दान के प्रभाव से श्रीकृष्ण के तीर्थंकर पद का बन्ध हुआ।

सच है सुपात्र दान से संसार में सत्पुरुषों को सभी कुछ प्राप्त हो जाता है।

बालको! श्रीकृष्ण की तरह तुम भी सदा दान देने के भाव रक्खो। दान से जगत में यश फैलता

जगत में दान बड़ा धर्म है।
दान देय मन हर्ष विशेषै, यह भव यश परभव सुख देखै

### प्रश्नावली

१—श्रीकृष्ण ने किसको क्या दान दिया ?
२—औषधि दान से श्रीकृष्ण को क्या फल मिला ?
३—दान देने से क्या लाभ होता है ?
४—नीचे लिखे छन्द का अर्थ समझाइये—
'दान देय मन हर्ष विशेषै । यह भव यश पर भव सुख देखै ॥'

## पाठ २१ सुलोचना और जयकुमार

जिस समय अयोध्या में भगवान् ऋषभदेव के पुत्र भरत राज्य करते थे, उसी समय में काशी के राजा अकम्पन के सुलोचना नाम की एक कन्या थी। जब वह युवती हो गई, तब उसके स्वयंवर-मंडप में अनेक राजपुत्र आये। भरत चक्रवर्ती का पुत्र अर्ककीर्ति और उसका सेनापति जयकुमार भी आए। सुलोचना मंडप में आई। उसने हर एक राजा को देखा, हर एक राजा की परीक्षा की, किन्तु कोई परीक्षा में पार न उतरा। अन्त में उसने जयकुमार की परीक्षा की वह सुलोचना की परीक्षा में पास हो गया। सुलोचना ने उसके गले में वरमाला डाल दी। इस पर भरत के पुत्र अर्ककीर्ति को क्रोध आ गया उसके साथियों ने उसे और भी

भड़का दिया। वह सेना सजाकर लड़ाई के लिए तैयार हो गया और उसने अपने दिल में ठान लिया कि सुलोचना को मैं ही ब्याह कर ले जाऊँगा।

सुलोचना के पिता अकम्पन बड़े नीतिवान् थे। वह सिवाय जयकुमार के और किसी को कन्या नहीं दे सकते थे। इसलिए उन्हें भी लड़ाई की तैयारियाँ करनी पड़ीं, परन्तु चक्रवर्ती की सेना के सामने सेना को कम देखकर उनको बड़ी चिन्ता हुई। मारे सोच के वे घर में आकर लेट रहे।

जब लेट रहे थे, उनकी रानी पद्मावती उनके पास आई और उनकी उदासी का कारण पूछा। राजा ने सब वृतान्त कह सुनाया। रानी सुनते ही कहने लगी, 'आप चिन्ता छोड़ें, आपकी प्रजा में स्त्रियां भी लड़ना जानती हैं। आप आज्ञा करें तो आपकी प्रजा में से बहुत सी स्त्रियां भी लड़ाई में लड़ने के लिए आपकी सेना में भर्ती हो जायेंगी और आपकी सेना बढ़ जायेगी।' राजा अकम्पन के मन में यह बात बैठ गई, उन्होंने आज्ञा की कि स्त्रियां भी सिपाही बन कर सेना में भर्ती हो लड़ाई लड़ें। राजा अकम्पन और जयकुमार की फौज एक ओर थी, दूसरी ओर अर्क-कीर्ति की सेना थी। दोनों ओर की सेना में घोर युद्ध

हुआ। अन्त में न्याय और सत्य की जीत हुई और अर्ककीर्ति को हार माननी पड़ी। फिर बड़ी धूमधाम से जयकुमार का विवाह सुलोचना के साथ हो गया और दोनों धर्म का पालन करते हुए सुख चैन से रहने लगे।

बालको! इस कथा से पता चलता है कि पहले स्त्रियां भी बलवती और शस्त्र विद्या में बड़ी निपुण हुआ करती थीं। सच है वीर माता ही वीर पुत्र-पुत्रियों को जन्म देती हैं।

### प्रश्नावली

१—जयकुमार और अर्ककीर्ति कौन थे?
२—जयकुमार और अर्ककीर्ति में युद्ध क्यों हुआ?
३—इस युद्ध में विजय किसकी हुई और उसका क्या फल हुआ?
४—सुलोचना और जयकुमार की कथा पढ़ने से क्या पता चलता है?

## पाठ २२ पाठशाला—गमन

बालको! सदा ठीक समय पर पाठशाला जाओ। पाठशाला में कभी देर से मत पहुँचो। वहाँ जाकर बड़ी विनय के साथ अपने गुरुजी को नमस्कार करो। फिर अपने स्थान पर बैठ जाओ। अपने कपड़े, किताबें सम्भाल कर ठीक तरह बैठो।

पाठशाला में जाकर इधर-उधर खेलने-कूदने का बातचीत करने का विचार बिल्कुल छोड़ दो । अपने साथियों को भी प्रेम के साथ प्रणाम करो । मिलाप करना सीखो । अपने पाठ को सदा ध्यान से याद करो । यदि किसी दिन पाठशाला का काम घर पर न किया हो तो पाठशाला में जाकर उसे याद करो । जो वहाँ जाकर अपना समय गप-शप और खेल-कूद में गंवाते हैं । वे अपना याद किया हुआ पाठ भी भूल जाते हैं ।

अपनी कलम और पेंसिल को भी कभी मुँह में मत डालो । कापी और किताबों पर बेकार बेहूदा बातें लिखकर उन्हें गन्दी और रद्दी मत बनाओ । फुटकर काम के लिये कागज अलग रक्खो कापी में से मत फाड़ो । अपनी पुस्तक, कापी, सलेट, कलम, पेंसिल, दवात आदि को अच्छी रीति से रक्खो । किताबों पर अच्छी मजबूत जिल्द और साफ कागज लगाकर अपना नाम और पता लिख दो जिससे एक दूसरे की किताबें मिलें नहीं ।

कभी किसी दूसरे बालक की चीज पर अपनी नीयत न बिगाड़ो । यदि कोई चीज लेने की जरूरत पड़े तो उसे पूछकर, अपना काम चल चुकने के बाद ...... ही लौटा दो ।

३—पाठशाला में किन-किन बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिए।
४—पाठशाला में क्या काम नहीं करने चाहिए ?
५—नम्रता और प्रीति को अपना भूषण समझो, इस वाक्य से आप क्या समझते हैं ?

## पाठ २३ दीपावली

भारत के हर एक गांव, कस्बे व शहर में कातिक बदी अमावस्या को दीपावली का त्योहार बड़े आनन्द के साथ मनाया जाता है। उसी रात को सब आदमी अपने मकानों की सफाई करते हैं, मिठाई बाँटते हैं, पूजा करते हैं, रोशनी करते हैं। क्योंकि उस रात को हर एक घर में दीपक जलाये जाते हैं, इसलिए इस त्योहार को दीपावली कहते हैं।

त्योहार बहुधा किसी न किसी अवतार या महान् पुरुष की स्मृति (यादगार) में मनाए जाते हैं। आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व अर्थात् ईसा से ५२६ वर्ष पहले कातिक बदी अमावस्या के दिन सवेरे ही सूर्य निकलने से पहले भगवान् महावीर का पावापुर (बिहार) में निर्वाण हुआ।

निर्वाण प्राप्ति का समाचार बिजली की तरह समस्त लोक में फैल गया। देवों और मनुष्यों ने पावा-

अपने साथियों के साथ अच्छा बर्ताव करो। किसी को सताओ नहीं। झूठ कभी मत बोलो। चोरी का भाव कभी दिल में मत लाओ। तुम्हारे माता-पिता तुम्हें जो कुछ खाने-पीने तथा पहनने के लिये दें उस पर सन्तोष करो। सदैव पाप से बचते रहो।

पाठशाला के सामान की रक्षा भी अपने सामान की तरह करो। यदि तुम्हारी पाठशाला का कोई सामान भूल से बाहर रह जाय तो उसे सम्भाल कर रख लो। दूसरे दिन उसे अध्यापकजी को सौंप दो।

जो छात्र अपनी पाठशाला और अध्यापकों के साथ प्रेम और विनय का बर्ताव करते हैं, उनको बहुत लाभ होता है उनका यश फैलता है। सभी लोग उनकी बड़ाई करते हैं।

तुम्हारे अध्यापक जो आज्ञा दें उनका विनय के साथ पालन करो। अपने सहपाठी भाइयों के साथ आपस में प्रेम-भाव रक्खो। पाठशाला से लौटते समय किसी से झगड़ा मत करो। नम्रता और प्रीति को अपना भूषण समझो।

## प्रश्नावली

१—पाठशाला में कैसे जाना चाहिये?

२—पाठशाला में जाकर अध्यापकों और साथियों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिये?

३—पाठशाला में किन-किन बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिए।
४—पाठशाला में क्या काम नहीं करने चाहिए ?
५—नम्रता और प्रीति को अपना भूषण समझो, इस वाक्य से आप क्या समझते हैं ?

## पाठ २३ दीपावली

भारत के हर एक गांव, कस्बे व शहर में कार्तिक बदी अमावस्या को दीपावली का त्योहार बड़े आनन्द के साथ मनाया जाता है । उसी रात को सब आदमी अपने मकानों की सफाई करते हैं, मिठाई बांटते हैं, पूजा करते हैं, रोशनी करते हैं । क्योंकि उस रात को हर एक घर में दीपक जलाये जाते हैं, इसलिए इस त्यौहार को दीपावली कहते हैं ।

त्यौहार बहुधा किसी न किसी अवतार या महान् पुरुष की स्मृति (यादगार) में मनाए जाते हैं । आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व अर्थात् ईसा से ५२६ वर्ष पहले कार्तिक बदी अमावस्या के दिन सवेरे ही सूर्य निकलने से पहले भगवान् महावीर का पावापुर (बिहार) में निर्वाण हुआ ।

निर्वाण प्राप्ति का समाचार बिजली की तरह समस्त लोक में फैल गया । देवों और मनुष्यों ने पावा-

प्रश्नावली

१—जिनेन्द्र स्तवन की कविता मुखाग्र सुनाओ ?
२—इस कविता के रचयिता का क्या नाम है ?
३—यह स्तवन किस समय पढ़ना चाहिए ?
४—इस स्तवन में किसकी स्तुति की गई है ?

# पाठ २५ रामचन्द्र जी (अ)

अयोध्या नगरी में सूर्यवंशी राजा दशरथ राज्य करते थे उनके चार रानियाँ थीं। सबसे बड़ी का नाम कौशल्या था। कौशल्या के पुत्र रामचन्द्रजी हुए। रामचन्द्रजी बड़े गुणवान्, बलवान् और माता-पिता के परम भक्त थे। बाकी तीन रानियों के लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न पैदा हुए।

उन्हीं दिनों में मिथिलापुर का राजा जनक था। उनकी लड़की का नाम सीता था। सीताजी बड़ी रूपवती और सुशीला थीं। जैसे रामचन्द्रजी बुद्धिमान और शूरवीर थे वैसे ही सीता जी बड़ी समझदार और चतुर थीं।

सीताजी के युवती होने पर राजा जनक ने उनका स्वयंवर रचा और घोषणा की कि जो कोई 'वज्रावली' धनुष को चढ़ायेगा वही सीता को वर सकेगा। जहाँ

कन्या स्वयं (आप) वर को पसन्द करती है उसे स्वयंवर कहते हैं ।

स्वयंवर में नाना देशों के अनेक वीर राजकुमार आये। रामचन्द्र भी लक्ष्मण सहित पधारे, जब रामचन्द्र जी ने देखा कि सब राजकुमारों के बल की परीक्षा हो चुकी और कोई धनुप को न चढ़ा सका, तब रामचन्द्रजी उठे और उन्होंने बात ही बात में अपने भुजबल से उस धनुप को चढ़ा दिया। सीताजी ने वरमाला रामचन्द्र जी के गले में डाल दी और उनका विवाह बड़े आनन्द और समारोह के साथ हो गया।

जब राजा दशरथ को वैराग्य हुआ तो उन्होंने तपस्या करने का विचार किया और राजचन्द्रजी को राज्य देने लगे। पर रंग में भंग हो गया। केकई दशरथ की छोटी रानी कहने लगी—'राज्य मेरे पुत्र भरत को मिले। राजा दशरथ केकई को किसी समय में दिए हुए वचन को न टाल सके। उन्होंने राज्य भरत को दे दिया और आप मुनि हो गये।

श्री रामचन्द्रजी बड़े सहनशील और धर्मात्मा थे पिता वचन पालने के लिये अपने भाई लक्ष्मण तथा महारानी सीताजी साथ ले वन चले गये।

### प्रश्नावली

१—जिनेन्द्र स्तवन की कविता मुखाग्र सुनाओ ?
२—इस कविता के रचयिता का क्या नाम है ?
३—यह स्तवन किस समय पढ़ना चाहिए ?
४—इस स्तवन में किसकी स्तुति की गई है ?

## पाठ २५ रामचन्द्र जी (अ)

अयोध्या नगरी में सूर्यवंशी राजा दशरथ राज्य करते थे उनके चार रानियाँ थीं। सबसे बड़ी का नाम कौशल्या था। कौशल्या के पुत्र रामचन्द्रजी हुए। रामचन्द्रजी बड़े गुणवान्, बलवान् और माता-पिता के परम भक्त थे। बाकी तीन रानियों के लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न पैदा हुए।

उन्हीं दिनों में मिथिलापुर का राजा जनक था। उनकी लड़की का नाम सीता था। सीताजी बड़ी रूपवती और सुशीला थीं। जैसे रामचन्द्रजी बुद्धिमान और शूरवीर थे वैसे ही सीता जी बड़ी समझदार और चतुर थीं।

सीताजी के युवती होने पर राजा जनक ने उनका स्वयंवर रचा और घोषणा की कि जो कोई 'वज्रावर्त' धनुष को चढ़ायेगा वही सीता को वर सकेगा। जहाँ

या स्वयं (आप) वर को पसन्द करती है उसे स्वयं-र कहते हैं।

स्वयंवर में नाना देशों के अनेक वीर राजकुमार ाये। रामचन्द्र भी लक्ष्मण सहित पधारे, जब मचन्द्र जी ने देखा कि सब राजकुमारों के बल की रीक्षा हो चुकी और कोई धनुष को न चढ़ा सका, ब रामचन्द्रजी उठे और उन्होंने बात ही बात में पने भुजबल से उस धनुष को चढ़ा दिया। सीताजी वरमाला रामचन्द्र जी के गले में डाल दी और नका विवाह बड़े आनन्द और समारोह के साथ हो या।

जब राजा दशरथ को वैराग्य हुआ तो उन्होंने तपस्या करने का विचार किया और रामचन्द्रजी को राज्य देने लगे। पर रंग में भंग हो गया। केकई दशरथ की छोटी रानी कहने लगी—'राज्य मेरे पुत्र भरत को मिले। राजा दशरथ केकई को किसी समय में दिए हुए वचन को न टाल सके। उन्होंने राज्य भरत को दे दिया और आप मुनि हो गये।

श्री रामचन्द्रजी बड़े सहनशील और धर्मात्मा थे पिता वचन पालने के लिये अपने भाई लक्ष्मण तथा महारानी सीताजी साथ से वन चले गये।

**प्रश्नावली**

१—राजा दशरथ कहां के राजा थे?
२—राजा दशरथ के कितने पुत्र थे, उनके नाम बताइये?
३—रामचन्द्रजी की माता का क्या नाम था?
४—सीताजी के पिता का क्या नाम था? वह कहां के राजा थे?
५—स्वयंवर किसे कहते हैं? सीताजी के स्वयंवर की क्या घोषणा थी?
६—सीताजी ने वरमाला किसके गले में डाली और क्यों?
७—रामचन्द्रजी को वनवास क्यों मिला?

## पाठ २६ रामचन्द्र जी (आ)

जब भरत जी को यह मालूम हुआ कि मेरी माता केकई ने मुझे राज्य दिलाने के लिये मेरे पूज्य श्री-रामचन्द्रजी को वनवास दिलाया है तो वह फूट-फूट कर रोने लगे और राजगद्दी पर न बैठे। अपनी माता केकई को साथ लेकर श्री रामचन्द्रजी को लौटा कर अयोध्या लाने के लिए वन में पहुंचे। श्री रामचन्द्रजी ने उन्हें धैर्य दिलासा देकर और समझा बुझाकर अयोध्या लौटा दिया।

जब रामचन्द्रजी वन चले गए, तो वहां वन, पर्वत नदियों की शोभा देखते हुए इधर उधर विचरने

लगे। मार्ग में जहाँ कोई दीन दुखी मिल जाता तो तो उस पर दया कर वे उसके कष्ट को दूर करते थे।

इस प्रकार घूमते घूमते वे दण्डक बन में पहुँचे। वहाँ एक दिन सीता जी अकेली बैठी थीं, लंका का रावण उधर आ निकला। सीताजी के रूप पर मोहित होकर वह जबरदस्ती सीता जी को अपने विमान पर बैठाकर लंका ले गया।

उधर जब रामचन्द्रजी को सीता नहीं मिली तो वे बड़े दुखी हुए और सीता जी को खोजने लगे। वीर हनुमान ने सीताजी का लंका में जाकर पता निकाला। रावण बड़ा कामी और अभिमानी था। उसके भाई विभीषण और उसकी पटरानी मन्दोदरी ने उसे सीता जी को लौटा देने को बहुत समझाया, परन्तु उसकी समझ में कुछ न आया।

रावण की नीचता पर श्री रामचन्द्रजी को क्रोध आ गया। उन्होंने भारी सेना लेकर लंका पर चढ़ाई करदी, असंख्य सेना सहित रावण को मार दिया। राज्य रावण के भाई विभीषण को देकर अपने भाई लक्ष्मण और सीता जी सहित अयोध्या लौट आए। उनके राज्य में सब सुखी थे। वे अपनी प्रजा से पुत्र

का-सा प्यार करते थे। अन्त में श्री रामचन्द्रजी मुनि हो गए। उन्होंने तप करके मुक्ति प्राप्त की। श्री रामचन्द्रजी की भक्ति सबको करनी चाहिए।

### प्रश्नावली

१—रावण कौन था? वह कैसा आदमी था?

२—श्री रामचन्द्रजी और रावण में क्यों युद्ध हुआ? उसका क्या फल हुआ?

# पाठ २७

## भारतवर्ष

प्यारा भारतवर्ष हमारा,
देश बड़ा ही नामी है ।
तीन लोक से प्यारा है यह,
सब देशों का स्वामी है ॥१॥
बहती है गङ्गा की धारा,
अमृत-सा जिसका जल है ।
चूम रहा है चरण समुन्दर,
जिसमें अति अपार बल है ॥२॥
जन्म लिया था यहीं राम ने,
पैदा हुई यहाँ सीता ।
यहीं चराई गाय श्याम ने,
कंस महा वैरी जीता ॥३॥
"यही जन्म ले वीर प्रभु ने,
मोक्ष मार्ग उपदेश दिया ।
*परम अहिंसा धर्म बता कर,
जीवों का उद्धार किया" ॥४॥

---

* मूल कविता में यह पद्य नहीं है ।

यहीं के जलवायु आदि से,
बना हमारा यह तन है ।
इसके रंग बिरंगे फूलों को,
लख फूल रहा मन है ॥५॥
इसी लिए हम कहते हैं यह,
भारतवर्ष हमारा है ।
माता की गोदी से भी हमको,
जो सदैव ही प्यारा है ॥६॥

(उद्धृत)

अ० भा० दि० जैन परिषद् पब्लिशिंग हाउस
दरीबा कलाँ, देहली

## सूची-पत्र

| पुस्तक | लेखक | मूल्य | |
|---|---|---|---|
| धर्म शिक्षावली प्रथम भाग | श्री उग्रसैन जैन | ३० | नये पैसे |
| ,, द्वितीय भाग | ,, ,, | ४० | ,, |
| ,, तृतीय भाग | ,, ,, | ६० | ,, |
| ,, चतुर्थ भाग | ,, ,, | ८० | ,, |
| ,, पंचम भाग | ,, ,, | ९० | ,, |
| चारित्र निर्माण प्रथम भाग | ,, ,, | १.०० | ,, |
| ,, दूसरा भाग | ,, ,, | १.१५ | ,, |
| ,, तीसरा भाग | ,, ,, | १.२५ | ,, |
| छःढाला | कविवर दौलतरामजी | ०.४० | ,, |
| रत्नकरण्ड श्रावकाचार | पं० पन्नालालजी वसन्त | ०.६० | ,, |
| द्रव्य संग्रह | मोहन लाल शास्त्री | ०.५० | ,, |
| पुरुषार्थ सिद्धयु पाय | उग्रसैनजी | १.५० | ,, |
| वीर पाठावली | बाबू कामता प्रसाद जी | १.१२ | ,, |
| भगवान महावीर (सजिल्द) | बा० कामताप्रसादजी | ४,०० | ,, |
| विशाल जैन संघ | बा० कामताप्रसाद जी | ०.३१ | ,, |
| मद्रास व मैसूर प्रान्त के जैन स्मारक | ब्र० शीतलप्रसादजी | १.१२ | ,, |
| जैन तीर्थ और उनकी यात्रा (सजिल्द व सचित्र) | बा० कामताप्रसादजी | २.०० | ,, |
| भाषा नित्य पूजन सार्थ | श्री भुवनेन्द्रजी 'विश्व' | ०.३१ | ,, |
| नित्य नियम पूजा भाषा | ब्र० शान्ति स्वभावीजी | ०.२५ | ,, |